







# महंगा पड़ता हैल्थ इंश्योरेंस...

सरकारी आंकड़े भले ही बता रहे हैं कि महंगाई कम हो गई है, लेकिन बाजार में कहाँ भी ऐसा नहीं लगता। और स्वास्थ्य बीमा यानि हैल्थ इंश्योरेंस में तो लगातार न केवल महंगाई बढ़ रही है, अपर्याप्त गड़बड़ घोटालों की खबरें भी लगातार बढ़ती जा रही हैं। इस साल हैल्थ इंश्योरेंस में करीब 15 प्रतिशत या उससे भी अधिक महंगाई देखी गई है। उस पर तुर्प ये कि सरकारें 18 प्रतिशत के हिसाब से हैल्थ इंश्योरेंस पर जीएसटी बकूल रखी हैं।

गरीबों के लिए तो केंद्र सरकार ने आयुष्मान योजना का लाभ दे रखा है। माना जाता है कि अमीर किसी भी बीमारी का खर्च आसानी से उठा सकते हैं। लेकिन इन दोनों पांतों के बीच में पिस जाता है मिडल क्लास यानि मध्यम वर्ग। कायदे से इस वर्ग को शिक्षा और अस्पताल का बड़ा खर्च बीमीएल केटियारी में या उससे भी नीचे ले जा सकता है। सामाजिक भाषा में आजकल इसे 'आउट ऑफ पॉकेट' मेडिकल खर्च कहते हैं। पिछले साल मार्च में आई विश्व स्वास्थ्य संस्ठन की रिपोर्ट कहती है कि इस तरह के मेडिकल खर्च के कारण भारत में हर साल 5 करोड़ से ज्यादा लोग गरीब हो जाते हैं। लेकिन दुखपूर्ण यह है कि इन्हें बीमीएल की सूची में समिल नहीं किया जाता।

देखा जाए तो इसी गरीबी से बचने के लिए लोग हैल्थ इंश्योरेंस की शरण में जाते हैं। खास बात ये है कि जब आप युवा होते हैं और इसे बेचने वाली कंपनियां आपके पास आती हैं तो आप युवा होनी देते। लेकिन जब उपर्युक्त लोगों पर आपको इनकी जरूरत महसूस होती है तो ये कंपनियां आपको भाव नहीं देते। हैल्थ पॉलिसी खरीदना भी आसान नहीं। कंपनियां एंजेंटों के जरिये हैल्थ बीमा बेचने को बढ़ावा देती हैं, जिससे आपका बीमा और महंगा हो जाता है। हैल्थ इंश्योरेंस सीधे ऑनलाइन खरीद सकें, इसकी सुविधा कम है और जटिल भी।

जब भी आप नई हैल्थ पॉलिसी लेते हैं, उसमें भी कई दिक्कतें हैं। अगर आप कर्मचारी हैं तो एम्प्लॉयर की ओर से दी गई हैल्थ पॉलिसी को भरपूर जोते हैं। पुरिकल ये है कि आपको जिस दिन गई, उसी दिन वो हैल्थ बीमा भी खर्च हो जाता है। तरह-तरह की कंपनियों के मकड़कल में ये चुनाव नहीं दिलाई जाती है कि कौन सी स्कीम अच्छी है। सरकार के दबाव में बीमा कंपनियों को साथ परिहार रीवा की जल संसाधन में करोड़ों के भ्रष्टाचार

## रवीन्द्र जैन



प्रगति के दो पूर्व मुख्यसचिव प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनने के सम्पर्क देख रहे हैं। यह रिटायर अफसर फिलहाल अपने अपने गृहगान्धी में बस गये हैं। दोनों की महत्वाकांक्षा अभी खर्च नहीं हुई है। एक को उम्मीद है कि कमलनाथ मुख्यमंत्री बने तो वे मुख्यसचिव व पुलिस महानिदेशक से ज्यादा ताकतवर होकर मप्र लांगें।

वे अपने लोगों को खबर भेज रहे हैं कि कमलनाथ उनके लिए सबसे ताकतवर प्रशासनिक पद का गठन करेंगे। दूसरे रिटायर अफसर को उम्मीद है कि कमलनाथ के सीएम बतें ही वे मुख्य प्रशासनिक सलाहकार के रूप में आपके दोंगे कांग्रेस के सूत्रों का कहना है कि कमलनाथ ने अभी तक किसी रिटायर अफसर को ऐसा कोई वायदा नहीं किया है।

## शेर की दहाड़ से अफसरों की नींद उड़ी



सबसे पहले स्पष्ट कर दूं कि शेर बहादूर सिंह परिहार मप्र जल संसाधन विभाग के चीफ इंजीनियर रहे हैं। जल संसाधन के एक अंहकारी अफसर के कारण परिहार इनसी नहीं बन पाए। अंहकारी अफसर ने उन्हें प्रताड़ित करने के कई जलन किये थे। शेर बहादूर परिहार अब रीवा में अपने ही विभाग की पोल खोल अधियन में लगे हैं। सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ परिहार रीवा की जल संसाधन में करोड़ों के भ्रष्टाचार

हैं। जल संसाधन के एक अंहकारी अफसर के कारण परिहार इनसी नहीं बन पाए। अंहकारी अफसर ने उन्हें प्रताड़ित करने के कई जलन किये थे। शेर बहादूर परिहार अब रीवा में अपने ही विभाग की पोल खोल अधियन में लगे हैं। सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ परिहार रीवा की जल संसाधन में करोड़ों के भ्रष्टाचार

को प्रमाणों के साथ उतारा कर रहे हैं।

सामाजिक कार्यकर्ताओं, मीडिया और गांव वालों के साथ मामूल बहिराली के बाबत तो अनुसार क्या काम होना चाहिए था और मामूल पर वास्तव में कितना घटिया काम हुआ है। अकेले रीवा संभाग में हजार करोड़ से अधिक कर्मचारी का भ्रष्टाचार उत्तराधार हो चुका है। परिहार की सक्रियता का परिणाम है कि राज्य सरकार अब तक दो बड़े ट्रेकेदारों को लेकर लिस्टर कर चुकी है। परिहार की मुहिम पर वास्तव में सभी दरानों को बहुत पीछे छोड़ दिया है। मप्र अभी में बीआरएस का ढांग से संगठन भी बना नहीं है और नवोदित नेताओं ने दस घोषणाएं भी कर दी हैं। महिलाओं को 5000 रुपये महिने देने, सिलंडर 100 रुपये, पुरानी पेंशन बहाली, किसानों का कर्जा माफ, गरीबों को आटा व बोरोजगारों को डाटा फ़ी, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता को 25000 रुपये मानदेय, किसानों को बिजली फ़ी, 200 यूनिट बिजली फ़ी, किसानों को 10 हजार रुपये प्रति हेट्टेयर अनुदान और अतिथि विद्वानों को नियमित करने की घोषणा कर दी है। वाह भाई, मजाक अच्छा है।

छेड़छाड़ के आरोपी बने गर्ल्स कॉलेज के प्राचार्य

महिला सुरक्षा को लेकर सरकारों के दोगलेपन का यह बड़ा उदाहरण है। राजधानी भोपाल में महिला प्रोफेसर से छेड़छाड़ के आरोपी प्रोफेसर को गर्ल्स कॉलेज का प्राचार्य बना दिया है। खास बात यह है कि राज्य सरकार ने इनके चाल चलन को देखते हुए इन्हें किसी भी गर्ल्स कॉलेज में नियुक्त करने के निर्देश दिए थे।

चर्चा है कि इनकी सर्विस बुक से यह आदेश ही गायब कर दिया गया है। इनका प्राचार्य महोदय पर घपले फेसबुक पर लिखा है कि विकाहुआ माल वापस नहीं होगा और न ही झीला जाएगा। दरअसल पिछले दिनों गुना में अटके लोग दुर्दृश्य थे कि ज्योतिरादित्य सिंधिया के पूर्व महाराजा, कंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया पर अभी का वायदा नहीं होता।

चर्चा है कि इनकी सर्विस बुक से यह आदेश ही गायब कर दिया गया है। इनका प्राचार्य महोदय पर घपले घोटालों के भी गंभीर आरोप हैं तो लेकिन मंत्री मेहरबान तो प्राचार्य पहलवान की तर्ज पर यह राजधानी के एक बड़े गर्ल्स कॉलेज में जमे हुए हैं। इनकी एक योग्यता यह है कि यह मप्र के पूर्व गृहमंत्री के बैठे हैं। चर्चा है कि इनके बारे में विधानसभा का उपचुनाव लड़ने पहुंच गये, लेकिन बुरी तरह हासने के बाद इन्होंने छतरपुर जिले के अपने छोटे से गांव में रहने का नियन्य लिया। समाजसेवा को अपना उद्देश्य भी बनाया। गांव के बच्चों को अच्छी अंग्रेजी सिखाने और उनका जीवनस्तर सुधारने में लग गये हैं। गांव में पूरी तरह पुरानी कोटिंग सेंटर खुद बच्चों को दिया है। जिसमें खुद बच्चों को पढ़ा और सिखा रहे हैं। रिटायर आईएएस के इस कार्य



उतार दी है। पार्टी को राष्ट्रीय दल का दर्जा मिलने के बाद अब मप्र में इसे गंभीरता से लिया जा रहा है। प्रदेश के सभी जिलों में दिली

और पंजाब से पर्यवेक्षक पहुंच गये हैं। यह दिन भर कोप्रेस और भाजपा के उन नेताओं से संपर्क कर रहे हैं। जिनका जनाधार है और अपनी अपनी पार्टी से टिकट के दावेदार हैं।

यह भरोसा दिला रहे हैं कि इस चुनाव में आम आदमी पार्टी में तीसरा विकल्प बनेगा। मजेदार बात यह है कि कांग्रेस के विकल्प के बारे में तीसरा विकल्प बनेगा।

महिला सुरक्षा को लेकर सरकारों के दोगलेपन का यह बड़ा उदाहरण है। राजधानी भोपाल में महिला प्रोफेसर से छेड़छाड़ के आरोपी प्रोफेसर को गर्ल्स कॉलेज का प्राचार्य बना दिया है। खास बात यह है कि राज्य सरकार ने इनके चाल चलन को देखते हुए इन्हें किसी भी गर्ल्स कॉलेज में नियुक्त करने के निर्देश दिए थे।

चर्चा है कि इनकी सर्विस बुक से यह आदेश ही गायब कर दिया गया है। इनका प्राचार्य महोदय पर घपले फेसबुक पर लिखा है कि विकाहुआ माल वापस नहीं होगा। यांवर विकाहुआ के बारे में घोषणा की गयी थी। चर्चा है कि इनकी सर्विस बुक से यह आदेश ही गायब कर दिया गया है। इनका प्राचार्य महोदय पर घपले घोटालों के भी गंभीर आरोप हैं तो लेकिन मंत्री मेहरबान तो प्राचार्य पहलवान की तर्ज पर यह राजधानी के एक बड़े गर्ल्स कॉलेज में जमे हुए हैं। इनकी एक योग्यता यह है कि यह मप्र के पूर्व गृहमंत्री के बैठे हैं। चर्चा है कि इनके बारे में विधानसभा का उपचुनाव लड़ने पहुंच गये, लेकिन बुरी तरह हासने के बाद इन्होंने छतरपुर जिले के अपने छोटे से गांव में रहने का नियन्य लिया। समाजसेवा को अपना उद्देश्य भी बनाया। गांव के बच्चों को अच्छी अंग्रेजी सिखाने और उनका जीवनस्तर सुधारने में लग गये हैं। गांव में पूरी तरह पुरानी कोटिंग सेंटर खुद बच्चों को दिया है। जिसमें खुद बच्चों को पढ़ा और सिखा रहे हैं। रिटायर आईएएस के इस कार्य

## वैचारिक कंगाल पार्टी की पुरानी चाल-पुराना हाल

## सर्वोत्तम पिंप्र

कनाटक में जीत के बाद ऐसा लग रहा था कि कांग्रेस नए भारत की वास्तविकताओं को समझेगी और अपनी चाल ढाल और विचारों को चुनावी नहीं देती। आपको जीवनस्तर विकास एंजेंटों के बीच अपनी स्कीम अ







भारत के शौर्य और स्वाभिमान की प्रतीक **वीरांगना  
रानी दुर्गाविती**

**बलिदान  
दिवस**  
24 जून, 1564



नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

# गौरीगत यात्रा

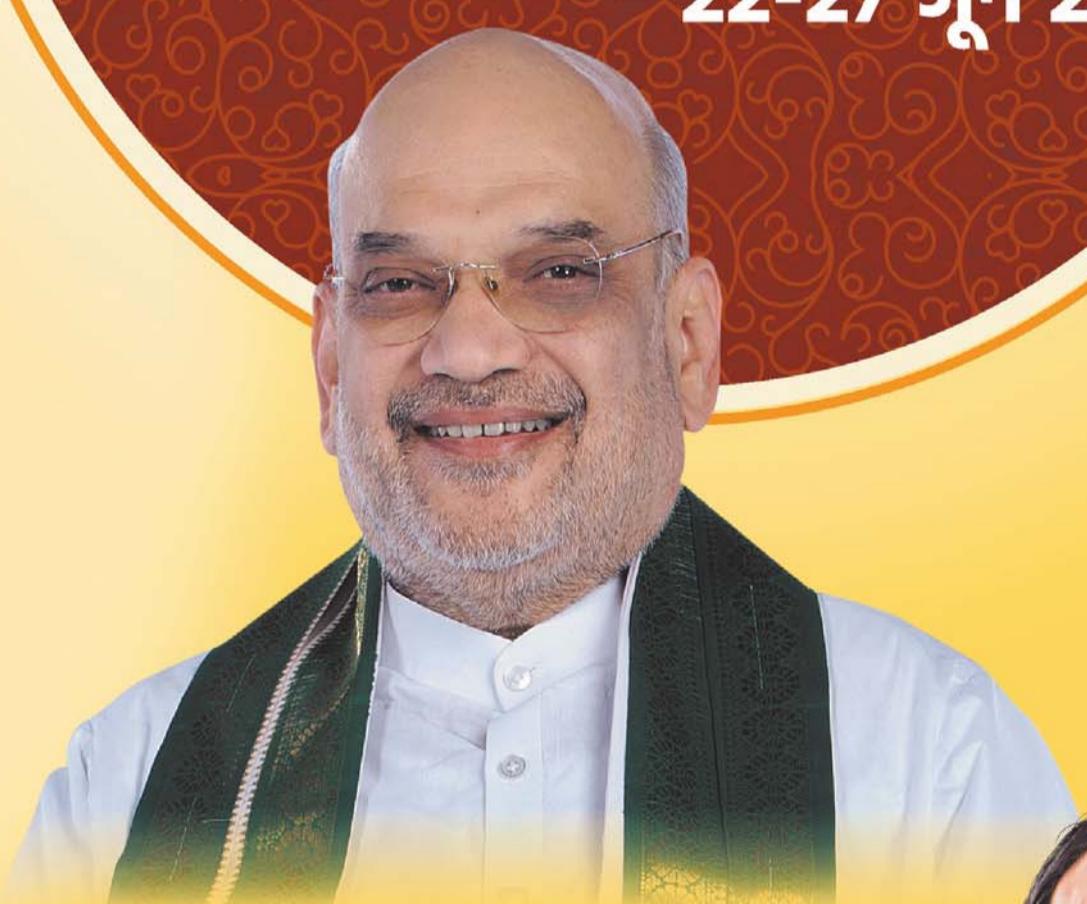
22-27 जून 2023

## शुभारंभ अमित शाह

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री  
भारत सरकार

### द्वारा

22 जून 2023 | सायं 4:00 बजे  
श्याम बिहारी शासकीय माध्यमिक विद्यालय  
बालाघाट, मध्यप्रदेश



भारत के शौर्य, स्वाभिमान, शक्ति और सुशासन की प्रतीक वीरांगना रानी दुर्गाविती को कृतज्ञ मध्यप्रदेश का कोटि-कोटि नमन। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश में जनजातीय गौरव की पुनर्स्थापना और जनजातीय समाज के सशक्तिकरण का संकल्प पूरा हो रहा है।

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

